EDITORIAL

May Day - 2024

The one celebration which is being observed worldwide with much enthusiasm and fervour by the workers of all countries, workers of all religions and workers of all languages is the MAY DAY. On this historic day the workers of the world pay homage to the martyrs' of MAY DAY who had sacrificed their life for improving the standard of life for all the workers.

On 01/05/1886 the unions in the city of Chicago along with other cities in America demanded eight hours as duty period. During those days workers were forced to work for more than 12 hours at a stretch every day. In those days the labourers leave their homes for work before the sun rise and return to home only after the sun set . Naturally this long working hours affected the family bonds and deprived them of any entertainment with family and children. In this background the demand for eight hours as duty was naturally viewed by the factory owners as a means to reduce their huge profits. Hence the factory owners vehemently opposed the idea of reduction in the working hours of the workers.

On the issue Unions organised a peaceful rally in the city centre of Chicago. With the support of the government and goons the factory owners deliberately created violence and unruly situation by infiltrating in the workers rally. The police and goons hired by the factory owners brutally attacked the workers and union leaders were arrested and put behind the bars. Police conducted a partisan enquiry and the key leaders were awarded death punishment for provoking the workers to agitate. Few other leaders who were jailed died during the pendency of enquiry against them.

This brutal assault on the workers and their trade union rights was keenly observed by a veteran communist leader Karl Marx who was instrumental in observing the MAY DAY throughout the globe in memory of the Chicago martyrs since 01/05/1889.

In India the May Day was first observed at Chennai (Tamilnadu) in 1923 by veteran trade union leader Singaravelar who later presided over the formation conference of the Communist Party of India in 1925 at Kanpur. Although the May Day was observed since 1889 in the memory of the martyrs of Chicago protest it is continuing even now to defend the rights of the workers against exploitation by the employers everywhere.

When we observe this year's May Day (2024) the condition of the workers in India is very bad due to the policies of the present government which is pro business and pro rich . In fact the present NDA government has privatised many CPSUs in its ten year tenure and reduced the number of employees considerably by so called VRS schemes. Naturally the present unemployment rate in India is the highest one since 1947. When we look inside our own company, BSNL the situation is going from bad to worse. Since 2009 BSNL is not earning profits only due to the policies of government of India which is mainly pro private telecom players. BSNL was deliberately made

inferior technologically to the private competitors so that it could not pose any serious competition to the private telecom companies. Though the 4G Spectrum for mobile telephone services was introduced by the private telecom companies in 2012 itself, still BSNL, the government owned telecom company is struggling to get the 4G Spectrum for its mobile services even now. The central cabinet decided to allot 4G to BSNL in October 2019, till this day it was not implemented even after five years. The continued step motherly treatment meted out to the BSNL by all the governments since its formation in 2000 resulted in its poor infrastructure and bad financial position.

The wage revision of the BSNL employees was last implemented in 2007. The revision of perks and allowances were last done in 2002 . Although the third wage revision was due from 01/01/2017 the DOT is obstructing the revision due to the conditions of third PRC on profitability and affordability. Actually more than 16000 employees are suffering due to the stagnation and didn't earn annual increments for the past four years or so. The NEPP promotion policy is unfairly discriminatory. The list of grievances of employees are more and more However the future of the BSNL is paramount to both the employees and pensioners. Hence while observing the May Day on 01/05/2024 we need to ensure that BSNL as a profit earning company and its workers get their rightful dues like Wage Revision and Perks/ Allowance revision is implemented with out any further delay and the stagnation issue is to be settled once for all. May Day revolutionary greetings to all comrades for a bright future.

संपादकीय

मई दिवस –2024

मई दिवस एक ऐसा उत्सव है जिसे दुनिया भर के सभी देशों के मजदूर, सभी धर्मों के मजदूर और सभी भाषाओं के मजदूर बहुत उत्साह और जोश के साथ मनाते हैं। इस ऐतिहासिक दिन पर दुनिया भर के मजदूर मई दिवस के शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं जिन्होंने सभी मजदूरों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी।

04/05/1886 को शिकागो शहर के साथ–साथ अमेरिका के अन्य शहरों में यूनियनों ने ड्यूटी अवधि के रूप में आठ घंटे की मांग की। उस अवधि के दौरान मजदूरों को हर दिन लगातार 12 घंटे से ज्यादा काम करने के लिए मजबूर किया जाता था। उन दिनों मजदूर सूर्योदय से पहले काम के लिए अपने घरों से निकलते थे और सूर्यास्त के बाद ही घर लौटते थे। स्वाभाविक रूप से इस लंबे काम के घंटों ने पारिवारिक बंधनों को प्रभावित किया और उन्हें परिवार और बच्चों के साथ किसी भी मनोरंजन से वंचित किया। इस पृष्ठभूमि में आठ घंटे की ड्यूटी की मांग को स्वाभाविक रूप से फैक्टरी मालिकों द्वारा अपने भारी मुनाफे को कम करने के साधन के रूप में देखा गया। इसलिए फैक्टरी मालिकों ने मजदूरों के काम के घंटों में कमी के विचार का कड़ा विरोध किया।

यूनियनों ने शिकागो के सिटी सेंटर में शांतिपूर्ण रैली आयोजित की। सरकार और गुंडों के समर्थन से फैक्ट्री मालिकों ने जानबूझकर मजदूरों की रैली में घुसपैठ करके हिंसा और अराजक स्थिति पैदा की। पुलिस और फैक्ट्री मालिकों द्वारा नियुक्त गुंडों ने मजदूरों पर क्रूरतापूर्वक हमला किया और यूनियन नेताओं को गिरफ्तार करके सलाखों के पीछे डाल दिया गया। पुलिस ने पक्षपातपूर्ण जांच की और मजदूरों को आंदोलन के लिए उकसाने के लिए प्रमुख नेताओं को मौत की सजा सुनाई गई। जेल में बंद कुछ अन्य नेताओं की उनके खिलाफ जांच के दौरान ही मृत्यु हो गई।

मजदूरों और उनके ट्रेड यूनियन अधिकारों पर इस क्रूर हमले को अनुभवी कम्युनिस्ट नेता कार्ल मार्क्स ने बहुत ध्यान से देखा था, जिन्होंने 01/05/1889 से शिकागो शहीदों की याद में दुनिया भर में मई दिवस मनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

भारत में मई दिवस पहली बार 1923 में चेन्नई (तमिलनाडु) में अनुभवी ट्रेड यूनियन नेता सिंगरावेलर द्वारा मनाया गया था, जिन्होंने बाद में 1925 में कानपुर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। यद्यपि मई दिवस 1889 से शिकागो विरोध के शहीदों की याद में मनाया जाता है, यह अब भी दुनिया भर में नियोक्ताओं द्वारा शोषण के खिलाफ श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए जारी है। जब हम इस वर्ष के मई दिवस (2024) को मनाते हैं, तो भारत में श्रमिकों की स्थिति वर्तमान सरकार की नीतियों के कारण बहुत खराब है, जो व्यापार समर्थक और अमीर समर्थक है। वास्तव में वर्तमान एनडीए सरकार ने अपने दस साल के कार्यकाल में कई सीपीएसयू का निजीकरण किया है और तथाकथित वीआरएस योजनाओं द्वारा कर्मचारियों की संख्या में काफी कमी की है। स्वाभाविक रूप से भारत में वर्तमान बेरोजगारी दर 1947 के बाद से सबसे अधिक है। जब हम अपनी खुद की कंपनी बीएसएनएल के अंदर देखते हैं, तो स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। 2009 से बीएसएनएल केवल भारत सरकार की नीतियों के कारण लाभ नहीं कमा रहा है, जो मुख्य रूप से निजी दूरसंचार कंपनियों के पक्ष में है यद्यपि निजी दूरसंचार कंपनियों द्वारा मोबाइल टेलीफोन सेवाओं के लिए 4 जी स्पेक्ट्रम 2012 में ही पेश किया गया था, फिर भी सरकारी स्वामित्व वाली दूरसंचार कंपनी बीएसएनएल अभी आओ अपनी मोबाइल सेवाओं के लिए 4 जी स्पेक्ट्रम प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अक्टूबर 2019 में बीएसएनएल को 4 जी आवंटित करने का निर्णय लिया, आज तक इसे पांच साल बाद भी लागू नहीं किया गया। 2000 में इसके गठन के बाद से सभी सरकारों द्वारा बीएसएनएल के साथ किए गए सौतेले व्यवहार के परिणामस्वरूप इसका बुनियादी ढांचा खराब हो गया और वित्तीय स्थिति खराब हो गई। बीएसएनएल कर्मचारियों का वेतन संशोधन आखिरी बार 2007 में लागू किया गया था। भत्तों का संशोधन आखिरी बार 2002 में किया गया था। यद्यपि तीसरा वेतन संशोधन 01/01/2017 से होना था, लेकिन दूरसंचार विभाग लाभप्रदता और सामर्थ्य पर तीसरे पीआरसी की शर्तों के कारण संशोधन में बाधा डाल रहा है। एनईपीपी की पदोन्नति नीति अनुचित रूप से भेदभावपूर्ण है। कर्मचारियों की शिकायतों की सूची बहुत लंबी है। हालांकि बीएसएनएल का भविष्य कर्मचारियों और पेंशनभोगियों दोनों के लिए सर्वोपरि है। इसलिए 01/05/2024 को मई दिवस मनाते हुए हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि बीएसएनएल एक लाभ कमाने वाली कंपनी है और इसके कर्मचारियों को वेतन संशोधन और भत्ते/भत्ते जैसे उनके उचित अधिकार बिना किसी देरी के लागू किए जाएं और ठहराव की समस्या का हमेशा के लिए समाधान हो। उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी साथियों को मई दिवस की क्रांतिकारी बधाई।